Environmental Protection and Social Work Profession

(Proceeding With Full Papers)

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Mr Ankit Sharma
Dr Pushpa Mishra
Dr Vikas Sharma

Scanned by CamScanner

Environmental Protection and Social Work Profession

[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra

Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&igshid=1svv9176cp9a

Scanned by CamScanner

पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण शिक्षा एवं समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका

डॉ. आभा सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्रस्तावना

सृष्टि के आदिकाल से ही मनुष्य अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहा है। इसलिए उसने अनेक आविष्कार किये और जैसे–जैसे उसकी आवश्यकता बढ़ी, वह साधनों का विकास करता गया। मनुष्य के पास एक ओर तो प्राकृतिक साधनों का कभी न खत्म होने वाला भंडार है, तो दूसरी ओर उसने वैज्ञानिक उपलब्धियों का भी बहुत बड़ा जखीरा खड़ा कर लिया है।

मनुष्य जिस प्राकृतिक, भौगोलिक और सामाजिक वातावरण से घिरा है वह सब उसका पर्यावरण है। कुछ उसके लिए बना–बनाया होता है और कुछ को वह स्वयं बनाता है। मनुष्य पर इसका कभी सीधा प्रभाव पड़ता है और कभी अप्रत्यक्ष रूप से, लेकिन पड़ता अवश्य है। इसी प्रकार मनुष्य में कभी तो प्रभाव सहन करने की क्षमता होती है और कभी वह प्रभाव उसके लिए असह्य हो जाता है। बहरहाल पर्यावरण को अपने अनुकूल करने के लिए या पर्यावरण के अनुकूल हो जाने के लिए मनुष्य को जीवन–समस्याओं से जूझना तो पड़ता ही है।

सभ्यताओं के विकास के साथ–साथ वन सिमटते चले गये है। औद्योगिक क्रान्ति और जनसंख्या के विकास ने मनुष्य के तकनीकी कौशल में अद्‌भूत विकास किया जिसके फलस्वरूप उसने पर्यावरणीय पारिस्थितिकियों का दास के रूप में शोषण करना शुरू कर एक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न कर दी है। धरातल पर प्रकृति प्रदत्त भू–दृश्यों की बजाय मानवकृत भू–दृश्यों का बाहुल्य बढ़ता गया और मनुष्य ने छोटे–छोटे गांवों से शहरों का निर्माण किया। पृथ्वी पर यातायात एवं संचार साधनों का जाल फैला दिया, बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया है, समुद्र से भूमि प्राप्त की है, मरूस्थलों में बड़ी–बड़ी नहरों का निर्माण कर सिंचाई द्वारा उन्हें हरा–भरा किया है। यही नहीं वह चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों तक छलांग भी लगाई गयी है और सब करते हुए मनुष्य ने पर्यावरण व प्रकृति के नियमों की स्पष्ट अवेहलना की है। मनुष्य ने जिस क्रूरता से पर्यावरणीय पारिस्थितिकियों के साथ छेड़छाड़ की है, उससे विभिन्न प्रकार के असंतुलन धरातल पर विद्यमान हो गये है जिसका दुष्परिणाम समस्त मानव जाति भुगत रही है।

भूमि से अत्यधिक उत्पादन तथा जल के विदोहन से संप्रति भूमि ह्रास एवं जल संकट की समस्या उत्पन्न हो गयी है तो दूसरी ओर औद्योगिक उत्पादनों के साथ वायु एवं जल प्रदूषण गहराने लगा है तथा वन विनाश से धरातल पर मरूस्थलीकरण की प्रवृत्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रकृति ने हमें जलवायु, मृदा, वनस्पति, वन और वन्य जीव खनिज संपदा आदि संसाधन पर्याप्त मात्रा में प्रदान किये हैं, परन्तु इन प्राकृतिक संसाधनों का उद्योगों और विकास प्रक्रियाओं में अत्यधिक उपयोग होने से प्रदूषण की समस्या निरन्तर गंभीर होती जा रही है जिससे असंतुलन की स्थिति बढ़ती जा रही है और यह असंतुलन पर्यावरण मानव के लिये हानिकारक होता जा रहा है तथा मानव ही नहीं सभी जीव जंतुओं पर पेड़–पौधों पर इसका प्रभाव पड़ता है जो हमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण रेडियो धर्मी प्रदूषण। प्राकृतिक पर्यावरणीय पारिस्थितिकी तन्त्र में असंतुलन की समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहा है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

पर्यावरण प्रबन्धन का एक प्रमुख पक्ष पर्यावरण शिक्षा है। अर्थात् पर्यावरण के विविध पक्षों, इसके घटकों, मानव के साथ अर्न्तसम्बन्धों, पारिस्थितिक–तंत्र, प्रदूषण विकास, नगरीकरण जनसंख्या आदि का पर्यावरण पर प्रभाव आदि की समुचित जानकारी देना।

पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या करना तथा उन सम्पूर्ण घटकों का विवेचन करना है जो पृथ्वी पर जीवन को परिचालित करते हैं इसमें मात्र मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव–जन्तु एवं वनस्पति भी सम्मिलित है।

Scanned by CamScanner